फ्रांत्स काफ्का पर विशेष

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 31 अंक 355 जून–2025

राष्ट्रीय काव्यधारा में क्रांतिकारी देशप्रेम

अवधेश प्रधान देवेंद्र चौबे प्रभाकर सिंह वैभव सिंह

(प्रस्तुति : जीतेश्वरी)

कहानियाँ

सत्यनारायण पटेल कमलेश

हंसा दीप देवांशु पाल अशोक शाह

(मराठी)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 31, अंक 355, जून 2025

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

देशप्रेम क्या है : **संपादकीय** 5

कहानियां

ठग का मौसेरा भाई ठग : **सत्यनारायण पटेल** 13
वैष्णव जन तो तेने कहिए : **कमलेश** 18
गाढ़े दिन : **हंसा दीप** 29
एकाकीपन : **देवांशु पाल** 34
केरलमित्र : **अशोक शाह** 40

कविताएं

लाल्टू/शैरिल शर्मा/जावेद आलम खान/कौशल किशोर/कीर्ति नारायण मिश्र/महादेव टोप्पो/सुधांशु कुमार मालवीय/राम बहादुर चौधरी 'चंदन'/गुड़िया तबस्सुम/केवल गोस्वामी/जनार्दन/प्रकृति प्रांजल/मनोज चौहान 46

परिचर्चा

राष्ट्रीय काव्यधारा में क्रांतिकारी देशप्रेम : **अवधेश प्रधान/देवेंद्र चौबे/प्रभाकर सिंह/वैभव सिंह**
(प्रस्तुति : **जीतेश्वरी**) 64

आलेख

साठोत्तरी साहित्य का दौर : **रविभूषण** 84
कोरकू जनजाति का मौखिक इतिहास : **विवेक कुमार/महेंद्र कुमार जायसवाल** 89

विश्वदृष्टि

भूख का कलाकार : **फ्रांत्स काफ्का**
(जर्मन से अनुवाद : **शिप्रा चतुर्वेदी**) 92
अमेरिकी कविताएं : **सारा के**
(अनुवाद : **बालकृष्ण काबरा 'एतेश'**) 100

समीक्षा संवाद

समय के यथार्थ के साथ जिरह करनेवाली कविताएं : **रमेश अनुपम**
(शैलजा पाठक, अंकिता आनंद, पार्वती तिर्की, मृदुला सिंह की पुस्तकें) 103

सोशल मीडिया 111

विविध

पाठक संसद/सांस्कृतिक समाचार/किताबें 114

लघुकथा

दरवाजा दीवारें और छत : **संतोष सुपोकर** 28/ सेवा : **गीता चौबे** 45

बतरस

मोत्ज़ार्ट-क़ाफ़्का का प्राग : चेकोस्लोवाकिया (यात्रा) : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

जयंत महापात्र (उड़िया)/ **सारा के** (अमेरिका)

मल्टी मीडिया

कात्यायनी की कविता / वाचन : **पूनम चंद्रलेखा**

कविताओं में रेखांकन :
आस्था

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
वार्षिक सदस्यता : 450 रुपये + 290/- (ज्ञान पोस्ट दर) = 740/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता : 450 रुपये (साधारण डाक व्यय सहित)
तीन साल : 1350 रुपये + 870/- (ज्ञान पोस्ट दर) = 2220/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें
एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

देशप्रेम क्या है

भारत जैसे एक बड़े बहुभाषिक देश के लिए देशप्रेम की जितनी अधिक जरूरत है, उतना ही आज यह एक कठिन मामला है। कम आबादी वाले छोटे देशों में देशप्रेम का रूप सहज है, क्योंकि एक भाषा- एक जाति वाले देश में साझी भावना आसानी से पैदा होती है। जिस देश की आबादी बड़ी है, कई जातीयताएं हैं और कई जातियां (कास्ट) हैं, वहां देशप्रेम मुश्किल से पैदा होता है। भारत में देशप्रेम को चुटकी में अवतरित हो जाने वाली भावना नहीं मान लेना चाहिए, यह एक गहन आत्मसंघर्ष से गुजरने पर ही संभव है।

सच्चे देशप्रेम के मार्ग में एक समस्या शिक्षा का अभाव है, अधपढ़ता है। 21वीं सदी में भी हमारे देश के भीतरी गांवों में ऐसे सैकड़ों निरक्षर पुरुष-स्त्रियां मिल जाएंगे जो भारत नाम से अपरिचित होंगे और मुश्किल से अपने जिला का नाम जानते होंगे। ऐसे करोड़ों शिक्षित लोग हैं, जिनमें देशप्रेम केवल तब जगता है, जब इस देश का इंग्लैंड या पाकिस्तान से क्रिकेट मैच होता है या सरहद पर अचानक युद्ध छिड़ता है।

वैश्वीकरण के बाद पश्चिमी देशों में प्रतिभा-पलायन बढ़ा है। ऐसी प्रतिभाओं के देशप्रेम का स्तर स्वत: उद्घाटित हो जाता है। लोगों को अधिक आमदनी और विलासितापूर्ण जीवन के लिए इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया जाकर बस जाने या वहां की 'सिटिजनशिप' लेने में कोई दुविधा नहीं होती। वे कभी-कभी तिरंगा हिला भी दें, यदि उनका देश में लौटने का मन न करे, देश के लोगों के दुख-विपदा पर उनके मन में कोई हलचल न हो, उनके अपने बुजुर्ग माता-पिता देश में एकाकीपन झेल रहे हों तो सोचना चाहिए कि ऐसे स्मार्ट व्यक्तियों में कैसा देशप्रेम होगा!

नव-उदारीकरण के जमाने में देखा जा सकता है कि लोग 'लोकल' हैं या सीधे 'ग्लोबल' हैं। उनमें जब भारतबोध ही नहीं है, देशप्रेम कहां से पैदा होगा!

क्या वैश्वीकरण और देशप्रेम एक-दूसरे के विपरीत हैं? क्या देशप्रेम बाजार